शोध-चिंतन पत्रिका: विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित ई शोध पत्रिका
अंक: 8; जनवरी-जून,2024

भूपेन हाजरिका के गीतों में आत्मनिर्भरता की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

पूजा बरुवा

शोध-सार :

आत्मनिर्भरता का अर्थ है किसी अन्य पर निर्भर न होकर स्वयं अपनी कुशलता एवं श्रम से कार्य करना। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सकता है। किसी भी देश, राज्य या समाज के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि युवा वर्ग आत्मनिर्भर बनें तथा श्रम को महत्व दें। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की कई संभावनाएँ हैं। खासकर पूर्वोत्तर का प्रमुख राज्य असम कई संभावनाओं से परिपूर्ण हैं। वर्तमान समय में तो पूरे भारत को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को समाज-सचेत गीतकार भूपेन हाजरिका बहुत पहले ही समझ चुके थे। उनके 'ऑटोरिक्सा चलाओँ', 'कर्म्मइ आमार धर्म्म', 'मेघे गिर् गिर् करे', 'आमि भाइटि-भनटि' आदि गीत इसका प्रमाण है। अपने गीतों के माध्यम से गीतकार ने असम के युवाओं को उनकी क्षमता पर यकीन दिलाया है और परोमुखोपेक्षित होने के स्थान पर स्वयं कुछ करने की प्रेरणा दी है। साथ ही आत्मनिर्भरता के मार्ग पर चलने के लिए जनता को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनका भी चित्रण उन्होंने अपने गीतों में किया है।

बीज-शब्द : *गीत, आत्मनिर्भरता, कृषि, बेरोजगारी, श्रम, चुनौतियाँ, संभावनाएँ*